पद १७२

(राग: देस - ताल: त्रिताल)

लागलासे चुटका गे करूं कैसें। क्षण एक न गमे या हरीविण।।ध्रु.।। मंजुळ भाषणें मोहुनियां मज। निघूनि गेले तेणें वसे मिनं खटका गे। विरहानळें जीव व्याकुळ होउनि। उठवेना देह झालासे मुटका गे।।२।। माणिक प्रभुलागी त्यजिन मी प्राणा। आण सखे वाटुनि विष घुटका गे।।३।।